संपादकीय

कानपुर में बाल मधुमेहियों का सम्मेलन

बच्चा जब रोता है तब माँ उससे कहती है ''बेटा चुप हो जा नहीं तो डॉक्टर के पास ले जाऊँगी, इंजेक्शन लगवाने''। क्या कोई उस माँ की त्रासदी को समझ सकता है, जिसे अपने हाथ से दिन में दो–तीन बार अपने जिगर के टुकड़े को इंजेक्शन लगाना पड़ते हों। जो अपने बच्चे को उसके जन्मदिन पर केक, चॉकलेट नहीं खिला सकती। जो रात को ठीक से सो नहीं सकती कि कहीं बच्चे को लो शुगर तो नहीं हो गया। शायद एक भुक्तभोगी के सिवाय कोई इस दर्द को पूरी तरह नहीं महसूस कर सकता।

डॉक्टर साहब यह मेरे बच्चे को ही क्यों हुआ? डॉक्टर साहब ऐसा मत कहिये कि इसे जीवनभर इंजेक्शन लगेंगे। क्या आपके साईंस में इंजेक्शन के सिवा कोई दवाई नहीं है? आप मेरा पैनक्रियाज़ निकाल कर इसे लगा दीजिये। ये हृदय विदारक दृश्य कई बार डॉक्टर की आँखों को भी छलछला जाते हैं।

कहते हैं समय बहुत बड़ा मरहम होता है। समय के साथ टाईप–1 मधुमेही का परिवार भी मन मसोस कर समझौता कर जीना सीख ही लेता है। परंतु ऐसे शुरुआती समय में उसे बहुत सहारे की जरूरत होती है। और यह सहारा उसे मिल सकता है दूसरे भुक्तभोगी परिवारों से। दूसरों के बच्चे भी इस बीमारी के साथ सार्थक और परिपूर्ण जीवन जी रहे हैं, यह उनके लिये सबसे बड़ा ढाँढस व मरहम होता है। यह उनको बचा सकता है उन बाबाओं व नीम हकीमों से जो शर्तिया इंसुलिन इंजेक्शन छुड़ाने की बात कर उनके बच्चे को मौत के मुँह में ढकेलने को तैयार बैठे हैं।

कानपुर के डॉ. ऋषि शुक्ला, डॉ. दीपक याज्ञनिक और उनकी टीम ने इस दिशा में एक अनूठा प्रयास किया है। टाईप–1 मधुमेहियों का एक सम्मेलन जनवरी 27–28 को आयोजित कर, वे बधाई के पात्र हैं। कानपुर का यह आयोजन इन सभी बाल मधुमेहियों व उनके परिवारजनों को साथ लाने का एक प्रयास है। वे आपस में मिलें, एक–दूसरे से अपने अनुभव बाँटें और महसूस करें कि वे अकेले नहीं हैं।

जब ये मधुमेही कानपुर से वापस घर जायेंगे तब ये ज्यादा परिपक्व होंगे अपनी बीमारी से लड़ने के लिये। ज्यादा जानकार होंगे अपनी बीमारी के बारे में और ज्यादा प्रफुल्लित होंगे अपने जैसे कई दोस्तों को पाकर। इनमें जज़्बा होगा गैर मधुमेही बच्चों से अधिक कर दिखाने का।

हमारा यह अंक टाईप–1 मधुमेहियों को समर्पित है।

● संपादक